[Shri H. N. Mukerjee]

If they do not want to sit another day, I don't care. Quite apart from the substance of the matter, what we say on the third reading of the Bill is not so important because I know they will throw over-board whatever suggestions are made. From the point of view of parliamentary democracy, I wish, you, Sir, put your foot down to any reference being made, that is, to this matter having to be taken to the Rajya Sabha and, therefore, no time being given in this House in order to enable the legislation to go through.

श्री आर० बी० बड़े : मेरा भी यही कहना है कि एक घंटा लंच का छोड़ दिया और सात बजे तक बैठने का तय कर लिया । बिजनेस ऐडवाइजरी कमेटी में माननीय मंत्री जी नहीं थे, वहां हमने तय किया कि 7 बजे के बाद नहीं बैठेंगे । अब आप कहते हैं कि सात बजे के बाद भी सदन चलेगा । तो इसके लिये अपोजीशन तैयार नहीं है ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The point raised by Mr. H. N. Mukerjee is very valid. It is very unfortunate that reference should be made to the business of the Rajya Sabha. This House cannot be influenced by what goes on in Rajya Sabha just as we do not except Rajya Sabha to be influenced by what goes on in this House. This is an accepted Parliamentary code. But there has been no basic change to the basic question. The only change is a very marginal change—a suggestion has been made by the Minister of Parliamentary Affairs that, if the members are keen about taking up the other two items, those items can be taken up now and then discussion on this Bill can be resumed... (*Interruptions*).

SHRI B. P. MAURYA (Hapur) : We have already wasted half an hour in this. (*Interruption*).

MR. DEPUTY-SPEAKER : You are not helping in any way. This is the situation. I would like to say again that I am in the hands of the House, whatever the House wants to do. Do you want to continue with the Third Reading now and finish with this Bill or do you want to take up the other two items now and then resume the discussion on this Bill later ?

SOME HON MEMBERS : No, no.

MR. DEPUTY-SPEAKER : No about what ? (*Interruption*) There are only two questions. Would you like to resume the discussion on this Bill later, after those two items have been disposed of or would you like to take up the Third Reading of the Bill now ?

SOME HON. MEMBERS : No, no.

MR. DEPUTY-SPEAKER : If you want neither, I will put the motion to the vote of the House.

SOME HON. MEMBERS : No, no.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That the Bill, as amended, be passed."

The motion was adopted.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Now we take up the half-an-hour discussion.

Mr. N. K. P. Salve.

17.59 hrs.

[SHRI K. N. TIWARY *in the Chair*]

HALF-AN-HOUR DISCUSSION *RE.* CONSTRUCTION OF RAILWAY OVERBRIDGE AT SAFDARJANG AERODROME

श्री नरेन्द्र कुमार साल्वे (बेतूल) : उपाध्यक्ष महोदय, जिस चर्चा को मैंने सदन में उठाया है उसका विषय बहुत महत्वपूर्ण है । वह अपनी अहमियत रखता है । वह यात्री जो सफदरजंग हवाई अड्डे से दक्षिण दिल्ली की तरफ यात्रा करते हैं और फाटक बन्द होने पर उन्हें जिन परेशानियों और जिन दिक्कतों का सामना करना पड़ता है उससे उन लोगों की जिन्दगी दूभर हो चुकी है । मुमकिन है कि मैं यह सवाल बिल्कुल न उठाता, मगर श्री अमरनाथ चावला के एक प्रश्न के उत्तर में रेलवे मंत्री ने जो जवाब दिया है वह इतना गोल मोल है कि मेरी समझ में नहीं आता ।

मैं यहां एक आदिवासी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हूं। ऐसी क्लिष्ट भाषा न तो मेरी समझ में आती है और न मैं उसका प्रयोग करता हूं। एक सीधा प्रश्न था कि सफदरजंग हवाई अड्डे का ब्रिज कब बनेगा।

> "Whether the construction work on the railway overbridge near Safdarjang Aerodrome, New Delhi, is progressing according to schedule."

Now, which schedule, Mr. Chawla did not specify. Therefore, the Railway Minister summarily said 'Yes'.

18.00 hrs.

कौन सा शिड्यूल है, कुछ मालूम नहीं है। लेकिन दूसरा जो उत्तर है वह और भी ज्यादा देखने लायक है :

> "The bridge proper to be constructed by the Railway is likely to be completed by 1973. The Bridge will be open to road traffic thereafter as soon as the work on the approach road is completed by the New Delhi Municipal Committee."

समझ में नहीं आता है कि पुल कब बनेगा और कब उस पर यातायात शुरू हो पाएगा। रेल उपमंत्री जी बैठे हुए हैं। उनकी संसदीय प्रतिभा प्रगल्भ और असीम है। मैं आशा करता हूं कि वह इसका सीधा साधा जवाब देंगे और बताएंगे कि लोगों को जो वहां रुकना पड़ता है, वह कब बन्द होगा। मैं भी रुका था वहां तब वहां पर जो विचार मन में आते हैं और जो बातें होती हैं रेल मंत्रालय और रेल मंत्री के बारे में वे चूंकि बहुत ही असंसदीय हैं, इसलिए मैं इनको यहां कह नहीं सकता हूं। लेकिन अगर वह लाबी में आएंगे तो मैं उनको बता दूंगा। गर्मियों के दिन थे और मैं उधर एक जगह खाना खाने के लिए जा रहा था। श्रीमती जी मेरे साथ थीं। वहां पर फाटक बन्द था। कई मिनटों के बाद श्रीमती जी ने डांट कर कहा कि बैठे गाड़ी में क्या कर रहे हो, जाकर देखो और पता लगाओ कि फाटक क्यों नहीं खुल रहा है। मैं फाटक के करीब पहुंचा और चौकीदार की तरफ जैसे ही मैंने देखा तो पता चला कि वह एक रेल मंत्री से कम नहीं है। हर कर्मचारी रेलवे का अपने आपको रेल मंत्री से कम नहीं समझता और रेल मंत्री तो अपने आपको किसी बादशाह से कम नहीं समझते। मैंने चौकीदार से पूछा कि फाटक कब खुलेगा ? जिस तरह से रेल मंत्री जवाब देते हैं उसी तरह से उसने दिया कि जब मुझे सूचना मिलेगी, खुल जाएगा। मैंने जब उससे पूछा कि तुम्हें सूचना कब मिलेगी तो उसने मेरी तरफ वैसे ही गुस्से के साथ देखा जैसे स्पीकर साहब कभी-कभी देखते हैं और कह देते हैं कि डिसएलाउड। बहरहाल जैसे ही मैं लौट कर आया श्रीमती जी ने पूछा कि क्या बात है, फाटक क्यों नहीं खुल रहा है तो मैंने उत्तर दिया कि पता नहीं चल रहा है और मुझे यह मालूम देता है कि अग्नि रथ आवन जावन, भय संकेत सूचक ताम्र धवल लौह पट्टिका जब गिरेगी तब यह फाटक ऊपर हो जाएगा। जैसे ही सिगनल गिरा, गाड़ी गई उसके बाद फाटक ऊपर हुआ।

सभापति महोदय, जो लोग गाड़ी में बैठते हैं, जो उनमें यात्रा करते हैं वे तो सफर करते ही हैं लेकिन जिनका उनके सफर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है और जो बसों आदि में जाते आते रहते हैं उनको आप कब तक परेशान करेंगे ? मैं जानना चाहता हूं कि यह पुल कब तक बन कर तैयार हो जाएगा और यातायात के लिए खुल जायेगा।

और भी लैवेल क्रासिंग्ज दिल्ली में दूसरी जगहों पर हैं। उनके लिए कब तक लोगों को इंतजार आप करवाते रहेंगे ? शकूरबस्ती में है और वहां पर सैकड़ों ट्रक्स खड़े हो जाते हैं जब फाटक बन्द हो जाता है। दो-चार स्टेशन या 25, 30 या 40 मील गाड़ी दूर होती है तब चौकीदार फाटक को बन्द कर देता है। जो आलम शकूरबस्ती में है वही शक्तिनगर में भी है। कभी न कभी तो इस इंतजार से राहत मिलनी चाहिये, छुटकारा मिलना चाहिये। सीधे तरीके से इसका जवाब आ जाए, यह मैं आपसे प्रार्थना करता हूं और इसी जवाब को लेने के लिए मैंने इस चर्चा को उठाया है।

[श्री नरेन्द्र कुमार साल्वे]

अन्त में मजाज का एक शेर सुनाकर खत्म कर दूंगा। मंत्री महोदय जैसे मैंने कहा है बहुत काबिल है, प्रगल्भ है। मैं आशा करता हूँ कि पुल बनाने में वह जल्दी करेंगे। आप जानते हैं कि रामायण में बीस मील सेतु कुछ दिनों में बन कर तैयार हो गया था। आज विश्वविख्यात इंजीनियर हमारे पास हैं और कुछ ही दिनों के अन्दर ये सब पुल बनकर तैयार हो सकते हैं···

रेल मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहम्मद शफी कुरेशी) : राम राज्य नहीं है।

श्री नरेन्द्र कुमार साल्वे : आपका राज्य होगा तो कैसे राम राज्य होगा। इन इंतजार की घड़ियों को तो आप खत्म करें।

मजाज का शेर सुनाकर मैं खत्म कर देता हूँ :

इन्तजार मौत से बदतर
और उम्र भर हमने इन्तजार किया।

इन शब्दों के साथ मैं मंत्री महोदय से स्पष्ट आश्वासन चाहता हूँ कि दक्षिण दिल्ली में रहने वाले नागरिकों को जो अक्षम्य तकलीफ में रहते चले आ रहे हैं और जिनको रोज सुबह शाम और दोपहर को तकलीफ होती है, और कितनी देर इस तकलीफ का सामना करना पड़ेगा। हम लोग तो कभी कभार खाना खाने के लिए या दूसरे काम के लिए उधर जाते हैं लेकिन उनको हर रोज जो परेशानी होती है तब उनके दिल में जो विचार उठते हैं, जो आर्जुएं जोर पकड़ती हैं, उनको मैं भूल नहीं सकता हूं। मंत्री महोदय इस बारे में कुछ न कुछ स्पेसिफिक एशोरेंस दें और कृपा करके ऐसी अंग्रेजी में जवाब न दें, जिस के कोई मानी नहीं है।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जनाबे वाला, साल्वे साहब ने एक बड़ी पुर-असर तकरीर तो की, लेकिन शायद उनको वाकयात का इल्म नहीं है।

श्री टी० सोहनलाल (करौल बाग) : सभापति महोदय, अगर हम दिल्ली वाले भी अपनी तकलीफ के बारे में बता दें, तो अच्छा हो। साल्वे साहब ने तो एक पुल के बारे में ही बताया है। मैं रोहतक रोड़ के बारे में बताना चाहता हूँ।

सभापति महोदय : जिन माननीय सदस्यों का बैलट में नाम नहीं आया है, उनको इजाजत नहीं दी जा सकती है।

श्री मुहम्मद शफ़ी कुरेशी : माननीय सदस्य की पुर-असर तकरीर के बाद मैं उनसे वाकयात बयान करना चाहता हूँ। मेहरोली रोड़ पर सफदरजंग-निजामुद्दीन सैक्शन पर, लैवल क्रासिंग के ऊपर जो पुल बनाया जा रहा है, उसके मुतल्लिक शुरू-शुरू में कुछ मुश्किलात थीं। यह जो नया पुल बन रहा है, उसके करीब ही सफदरजंग हवाई अड्डा है। इस बारे में सिविल एवियेशन के महकमे के साथ कुछ अर्से तक बात-चीत चलती रही। वे नहीं चाहते थे कि हवाई अड्डे को वहां से हटाया जाये। आखिरकार 3 फरवरी को यह फैसला कर लिया गया कि वहां पर यह पुल बनाया जायेगा। उसके बाद यह मामला नई दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी के यहां पड़ा रहा, जो कि इसकी एपरोच रोड्स को बनायेगी। इन दो रुकावटों की वजह से वह काम जल्दी न हो सका। अब ये दोनों रुकावटें दूर हो गई हैं और यह काम एक ठेकेदार को दे दिया गया है। इस तरह के जो पुल हम बनाते हैं, वे हम रेल की पटरी पर बनाते हैं और एपरोच रोड्स बनाने का काम लोकल एथारिटी को—इस मामले में नई दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी को—करना है।

इस सिलसिले में कोई बात छिपाई नहीं गई है। मैं सदन को यकीन दिलाना चाहता हूँ कि जुलाई, 1973 तक यह पुल आमदो-रफत के लिए खुल जाएगा। मैं खुद मौके पर गया हूं। मैंने देखा है कि पुल और एपरोच रोड्स का काम शिड्यूल के मुताबिक चल रहा है। तवक्को की जाती है कि जुलाई, 1973 तक यह काम मुकम्मल हो जाएगा।

माननीय सदस्य ने अपनी तकलीफ का जिक्र

किया है कि वह अपनी मोहतरिमा को साथ लेकर जा रहे थे और उनको रास्ते में रुकना पड़ा। मुझे उन से हमदर्दी है। लेकिन साथ ही उनको कम से कम इस बात की दाद देनी चाहिए कि रेलवे के महकमे ने उनको मौका दिया कि वह अपनी मोहतरिमा के साथ एक घंटा तो गुजारें। ज्यादा वक्त तो वह पार्लियामेंट में गुजारते हैं, या यारों-दोस्तों से मिलते-जुलते हैं। अगर उनको पहली दफा ऐसा मौका मिले, तो उनको हमारा शुक्रिया अदा करना चाहिए, न कि हमसे नाराज होना चाहिए।

मैं नहीं समझता हूं कि इस में और कोई बात रह गई है। अगर माननीय सदस्य चाहते हैं, तो मैं बता सकता हूँ कि इसमें खर्च का तखमीना वगैरह क्या है। उसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं यकीन दिलाता हूँ कि जुलाई, 1973 तक यह पुल ट्रैफिक के लिए खुल जाएगा।

[شری محمد شفیع قریشی: [illegible] جی۔ ماننیہ سدسیہ جی نے [illegible] کے بعد میں ان سے [illegible]
بیان کرنا چاہتا ہوں مہرولی روڈ پر صفدر جنگ نظام الدین سٹیشن پر ریلوے کراسنگ کے
اوپر جو پل بنایا جا رہا ہے اس کے متعلق شروع شروع میں کچھ مشکلات تھیں۔ [illegible]
اس کے قریب ہی صفدر جنگ ہوائی اڈہ ہے۔ اس بارے میں سول اوییشن کے محکمے کے ساتھ
کچھ عرصہ تک بات چیت چلتی رہی وہ نہیں چاہتے تھے کہ ہوائی اڈہ کو وہاں سے اٹھایا جائے
آخرکار ۳ فروری کو یہ فیصلہ کر لیا گیا کہ وہاں پر یہ پل بنایا جائیگا۔ اس کے بعد یہ معاملہ نئی دہلی
میونسپل کمیٹی کے یہاں پڑا رہا۔ جو کہ اس کی اپروچ روڈ کو بنائیگی۔ ان دو رکاوٹوں کی وجہ سے
یہ کام جلدی نہ ہو سکا۔ اب یہ دونوں رکاوٹیں دور ہو گئی ہیں اور یہ کام ایک ٹھیکیدار کو دے دیا
گیا ہے۔ اس طرح کے جو پل ہم بناتے ہیں وہ اہم ریل کی پٹری پر بناتے ہیں اور اپروچ روڈ
بنانے کا کام لوکل اتھارٹیز کو۔ اور اس معاملے میں نئی دہلی میونسپل کمیٹی کو کرنا ہے

اس سلسلے میں کوئی بات چھپائی نہیں گئی ہے۔ میں سدن کو یقین دلانا چاہتا ہوں کہ جولائی ۱۹۷۳ تک یہ پل آمدورفت کے لئے کھل جائیگا۔ میں خود موقعہ پر گیا ہوں۔ میں نے دیکھا ہے کہ پل اور اپروچ روڈ کا کام شیڈول کے مطابق چل رہا ہے۔ توقع کی جاتی ہے کہ جولائی ۱۹۷۳ تک مکمل ہو جائیگا۔

ماننیہ سدسیہ نے اپنی تکلیف کا ذکر کیا ہے۔ کہ وہ اپنی محترمہ کو ساتھ لے کر جا رہے تھے اور ان کو راستے میں رکنا پڑا۔ مجھے ان سے ہمدردی ہے۔ لیکن ساتھ ہی ان کو کم سے کم اس بات کی داد دینی چاہئے کہ ریلوے کے محکمے نے ان کو موقع دیا کہ وہ اپنی محترمہ کے ساتھ ایک گھنٹہ گذاریں۔ زیادہ وقت تو وہ پارلیمنٹ میں گذارتے ہیں۔ یا یار دوستوں سے ملتے رہتے ہیں۔ اگر ان کو پہلی دفعہ ایسا موقع ملا تو ان کو ہمارا شکریہ ادا کرنا چاہئے نہ کہ ہم سے ناراض ہونا چاہئے۔

میں نہیں سمجھتا ہوں کہ اس میں اور کوئی بات رہ گئی ہے۔ اگر ماننیہ سدسیہ چاہتے ہیں تو میں بتا سکتا ہوں کہ ہم نے خرچ کا تخمینہ لیا ہے۔ اس کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔ میں یقین دلاتا ہوں کہ جولائی ۱۹۷۳ تک یہ پل ٹریفک کے لئے کھل جائیگا۔]

— ——

18.09 hrs.

DISCUSSION ON RE-OPENING OF S. S. LIGHT RAILWAY FROM SHAHDARA TO SAHARANPUR

श्री रामचन्द्र विकल (बागपत) : सभापति महोदय, शाहदरा-सहारनपुर लाइट रेलवे के बन्द होने से शाहदरा और सहारनपुर के बीच का, जो सौ मील लम्बा इलाका उजड़ गया है, उस पर विचार करने के लिए आज आखिर में समय मिला है और वह समय भी बहुत कम है। बहुत से माननीय सदस्य इस पर बोलना चाहेंगे।

सभापति महोदय : यह एक घंटे का डिसकशन है। इसलिए आप लोगों से निवेदन है कि थोड़े समय में अपनी-अपनी बात रख दें।

श्री रामचन्द्र विकल : मैं बहुत संक्षेप में कुछ तथ्य और तर्क रखना चाहूंगा कि इस रेलवे लाइन के बन्द होने से सौ मील लम्बे इस इलाके के साथ कैसा अन्याय किया गया है।

सभापति महोदय, मैं आपके द्वारा उन तथ्यों और तर्कों से पहले माननीय रेल मंत्री जी का ध्यान माननीय शर्मा जी द्वारा जो पेटीशन कमेटी की रिपोर्ट 22 मई को इसी सदन में प्रस्तुत की गई उसकी तरफ दिलाना चाहता हूँ और मैं विशेषकर उन से प्रार्थना करूंगा कि उस के पृष्ठ 30 और 36 का वह अवश्य अवलोकन करें। मैं थोड़े में उनका ध्यान इस तरफ भी दिलाना चाहता हूँ कि 13-8-72 को रेल मंत्री जी को लोक सभा के 40 माननीय सदस्यों द्वारा एक स्मृति-पत्र दिया गया, उसमें भी इस रेलवे लाइन के बन्द होने से इस इलाके की तमाम समस्याओं के ऊपर एक विस्तृत नोट दिया गया है। उसकी तरफ भी मैं उनका ध्यान दिलाना चाहूंगा कि उसको उन्होंने अवश्य पढ़ लिया होगा या नहीं तो आज के बाद उसको अवश्य पढ़ने का कष्ट करेंगे। मैं उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री जी के उन पत्रों की तरफ भी माननीय मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूँ जो उन्होंने कई बार इस बात के लिए लिखे कि हमारा बहुत बड़ा क्षेत्र इस रेलवे लाइन के बन्द हो जाने से उजड़ रहा है और उत्तर प्रदेश की सरकार इस रेलवे लाइन के नफा नुकसान मे